



# अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार, 18 अक्टूबर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

## सीएम योगी आदित्यनाथ का समाज के दुश्मनों को अल्टीमेटम, बोले- चौराहों पर लगेगी तस्वीर

देवीपाटन मंदिर में मत्था टेकने के बाद बलरामपुर में पुलिस लाइन में योगी आदित्यनाथ ने मिशन शक्ति का किया आगाज

बलरामपुर, जेएनएन। उत्तर प्रदेश में महिला, बहन व बेटियों के साथ बढ़ते अपराध को लेकर बेहद गंभीर हो चुके मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को बलरामपुर में बड़ी घोषणा की। देवीपाटन मंदिर में मत्था टेकने के बाद बलरामपुर में रिजर्व पुलिस लाइन में सीएम योगी आदित्यनाथ ने मिशन शक्ति का आगाज किया। सीएम योगी आदित्यनाथ ने रिजर्व पुलिस लाइंस में आयोजित समारोह में कहा कि मिशन शक्ति के तहत प्रदेश भर में शोहदों व मनचलों को चिह्नित कर उनकी धरपकड़ की जाएगी। इसके साथ ही सभ्य समाज के दुश्मनों की तस्वीर चौराहों पर लगेगी। उन्होंने कहा कि बेटियों व महिलाओं की



सुरक्षा एवं विघटनकारियों को कठोर सजा का संदेश देने के लिए यह अभियान शुरू किया गया है। उन्होंने वादा किया कि बिटिया के दुष्कर्मियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट में मुकदमा चलाकर शीघ्र ही कठोर

सिपाही की नैतानी होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार प्रदेश की हर बेटी-हर महिला का सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ उनके स्वावलंबन के लिए प्रतिबद्ध है। उत्तर प्रदेश में जो लोग नारी गरिमा और स्वाभिमान को दुष्प्रभावित करने की कोशिश करेंगे, बेटियों पर बुरी नजर डालेंगे, उनके लिए उत्तर प्रदेश की धरती पर कोई जगह नहीं है। यह लोग सभ्य समाज के लिए कलंक हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ऐसे अपराधियों से पूरी कठोरता से निपटेगी, इनकी दुर्गति तय है। उन्होंने कहा कि यह बड़ा अभियान तीन चरण में 180 दिनों तक चलेगा। जिसमें प्रदेश के 24 विभागों का सहयोग लिया जाएगा।

इसके साथ ही इस अभियान से अंतरराष्ट्रीय व स्थानीय सामाजिक संगठन अभियान से जुड़ेंगे। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि शक्ति के स्वरूप का अहसास कराने के लिए यूपी में अब 20 प्रतिशत भर्ती बेटियों की होगी। उन्होंने कहा कि बलरामपुर के सैसड़ी क्षेत्र में हुई घटना दुःखद है। बिटिया के साथ बर्बरता की गई है। उस बेटी के सम्मान तथा अपार श्रद्धा के लिए मिशन शक्ति अभियान की शुरुआत बलरामपुर देवीधाम से की गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जिन्हें विकास अच्छा नहीं लगता है, जिन्हें देश में गरीबों का उत्थान अच्छा नहीं लगता है, वो ही लोग सरकार की नीतियों पर भी

प्रश्न खड़ा कर रहे हैं। वो देश की सुरक्षा के सामने स्वयं प्रश्न खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं। यह लोग देश के दुश्मनों की भाषा बोलने का कार्य कर रहे हैं। नारी 'शक्ति' की प्रतीक है। हमारी सनातन परंपरा में नारी पूजनीय है। नवरात्रि का अनुष्ठान इसी का द्योतक है। इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिशन शक्ति का शुभारंभ दीप प्रज्वलन कर किया। इस दौरान अयोध्या से आए कलाकारों व स्थानीय विद्यालय की छात्राओं के स्वागत नृत्य के बाद सीएम ने बटन दबाकर महिला शक्ति के लोगो का अनावरण किया। लघु फिल्म के माध्यम से मिशन शक्ति की रूपरेखा के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

## जेट एयरवेज को मिला खरीदार, जल्द उड़ान भरने की उम्मीद बढ़ी



1,000 करोड़ के निवेश का प्रस्ताव

मुंबई, पीटीआइ। कर्ज के बोझ तले डूबी और दिवालिया प्रक्रिया से गुजर रही निजी विमान कंपनी जेट एयरवेज को नया खरीदार मिल गया है। इसका मतलब यह है कि कंपनी के जल्द उड़ान भरने की उम्मीद बढ़ गई है। कंपनी के कर्जदाताओं की समिति (सीओसी) ने ब्रिटेन-स्थित काल्मार्क कैपिटल व यूई-स्थित कारोबारी मुरारी लाल जालान के कंसोर्टियम का रिजर्वेशन प्लान मंजूर कर लिया है। बता दें कि कंपनी पर उसके कर्जदाताओं का 8,000 करोड़ रुपये से अधिक बकाया है। कर्जदाताओं में अधिकतर सरकारी बैंक हैं। जेट एयरवेज के रिजर्वेशन प्रोफेशनल आशीष छात्राड़िया ने शेयर बाजार बीएसई को बताया कि प्रस्ताव ई-वोटिंग के माध्यम से इस समाधान योजना को मंजूरी दी गई है।

हरियाणा-स्थित फ्लाइट सिमुलेशन टेकनीक सेंटर, मुंबई-स्थित विंग चार्टर व अबू धाबी के इंपीरियल कैपिटल इवेंट्स मैटर्स एलएलसी का था। घटनाक्रम से नजदीक से जुड़े एक स्रोत के मुताबिक कंपनी ने मालिकों ने इसका परिचालन दोबारा शुरू करने संबंधी गतिविधियों के लिए 1,000 करोड़ रुपये के निवेश का प्रस्ताव रखा है। कंपनी के कर्जदाताओं को पांच वर्षों में अतिरिक्त 1,000 करोड़ रुपये दिए जाएंगे। कंपनी के परिचालन कर्जदाताओं को भी 10 प्रतिशत हिस्सेदारी दी जाएगी। जेट एयरवेज को पिछले वर्ष जून में दिवालिया प्रक्रिया में भेजा गया था। तब से अब तक कंपनी के कर्जदाताओं की 16 बैठकें हो चुकी हैं। दिवालिया प्रक्रिया के इस साल जून में पूरा होने की उम्मीद थी, लेकिन लॉकडाउन के चलते पहले इसे 21 अगस्त तक और फिर बाद में अनिश्चितकाल के लिए टाल दिया गया था।

मुंबई लाल जालान यूई के कारोबारी और एमजे डेवलपर्स के मालिक हैं। उनकी रियल एस्टेट, मार्केटिंग, कंसल्टिंग और इंजीनियरिंग वकर्स जैसे क्षेत्रों में गहरी रुचि बताई जाती है। जालान ने यूई, भारत और रूस समेत कई देशों में निवेश किया हुआ है।

## वैक्सीन की पहुंच तेजी से सुनिश्चित करने के लिए भी करना होगा प्लान : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली, पीटीआइ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कोरोना महामारी को रोकने के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा मीटिंग की अध्यक्षता की। इस मीटिंग में उन्होंने कहा कि महामारी को रोकने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि ये महामारी अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हुई है इसको रोकने के लिए किए जा रहे प्रयासों को बनाए रखना होगा। लोगों को दो गज की दूरी और मास्क जरूरी जैसी चीजों का पालन करना होगा।

अपने पड़ोस में अपने प्रयासों को सीमित नहीं करना चाहिए, बल्कि वैक्सीन वितरण प्रणाली के लिए टीके, दवाइयां और आईटी प्लेटफॉर्म प्रदान करने के लिए पूरी दुनिया तक पहुंचना चाहिए। पीएम नरेंद्र मोदी ने देश में कोविड -19 महामारी की स्थिति और टीका वितरण और प्रशासन की तैयारियों की समीक्षा की। इस बैठक में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री, सदस्य (स्वास्थ्य) नीति आयोग और भारत सरकार के अन्य अधिकारी मौजूद थे।



कोरोना वैक्सीन का परीक्षण अग्रिम चरण में है। यदि सबकुछ ठीक रहा तो देश में जल्द ही स्वदेशी कोरोना वैक्सीन का उत्पादन शुरू हो जाएगा। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि भारत में जिन तीन टीकों को विकसित करने का काम प्रगति पर है

हैं क्योंकि सदियों और लोहारों का मौसम शुरू हो रहा है। देश में दैनिक संक्रमण के मामले जो 97 हजार तक पहुंच चुके थे, उनमें उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। अब रोजाना आने वाले मामले 80 हजार से कम हो चुके हैं। पिछले पांच सप्ताह से इनमें गिरावट दर्ज की जा रही है। 18 सितंबर को सक्रिय मामले सर्वाधिक 10.17 लाख रिकॉर्ड किए गए। इसके बाद से लगातार मामलों में गिरावट आ रही है। करीब दो लाख कम होकर सक्रिय मामले 7.98 लाख हो चुके हैं। यही नहीं मामलों के दोगुना होने की अवधि भी बढ़ गई है। अगस्त मध्य में मामले 25.5 दिन में दोगुना हो रहे थे, वहीं अब यह अवधि 72.8 दिन हो गई है। महामारी विशेषज्ञों का मानना है कि हमें लापरवाही नहीं बरतनी

चाहिए अन्यथा यह कोरोना की दूसरी लहर का कारण बन सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि त्योहारी सीजन, स्कूल-कॉलेज खुलने, सर्दी और प्रदूषण के चलते इसकी दूसरी लहर आ सकती है। कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों के साथ दिल्ली एक बार फिर सर्वाधिक प्रभावित शहरों की सूची में पहले स्थान पर पहुंच चुका है। गुरुवार को दिल्ली में करीब 3,500 नए मामले सामने आए थे और इसके साथ ही कुल संख्या 3.21 लाख हो गई थी। पुणे पिछले करीब डेढ़ महीने से सर्वाधिक प्रभावित शहरों की सूची में पहले स्थान पर बना हुआ था। अगस्त और सितंबर की शुरुआत में यहां पांच हजार मामले रोजाना सामने आ रहे थे, जबकि अब प्रत्येक 1,500 हो चुके हैं। वहीं बंगलुरु में भी मामले तेजी से बढ़े हैं।

## राज्यों के अधिकारियों के खिलाफ लोकपाल में सबसे ज्यादा शिकायतें, केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों के खिलाफ भी कमप्लेन

उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए गठित लोकपाल को 2019-20 में कुल 1,427 शिकायतें मिलीं



सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, वैधानिक निकायों, न्यायिक संस्थानों और स्वायत्त निकायों के खिलाफ 200 शिकायतें और निजी व्यक्ति और संगठनों के खिलाफ 135 शिकायतें भी मिलीं। राज्यों के मंत्रियों और विधायकों के खिलाफ 68 और केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों के खिलाफ चार शिकायतें भी लोकपाल को प्राप्त हुईं।

कूल शिकायतों में 220 अनुरोध, टिप्पणियां और सुझाव भी शामिल हैं। राज्य सरकार के खिलाफ जो 613 शिकायतें मिली हैं, उनमें राज्यों के अधिकारी और राज्य स्तर पर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, वैधानिक निकाय, न्यायिक संस्थान और स्वायत्त निकाय शामिल हैं। इनमें से 1,347 शिकायतों का निपटारा कर दिया गया है और 1,152 शिकायतें लोकपाल के अधिकार क्षेत्र के बाहर की पाई गई हैं। 78 शिकायतों के लिए निर्धारित फॉर्म पर शिकायत देने को कहा गया, 45 स्थिति या जांच रिपोर्ट के लिए भेजी गईं और 32 शिकायतों पर संबंधित अधिकरण को कार्रवाई करने के लिए निर्देश दिए गए। डाटा के मुताबिक 29 शिकायतें केंद्रीय सतर्कता आयोग के पास लंबित हैं। इनमें से 25 पर स्थिति रिपोर्ट और चार पर जांच रिपोर्ट मांगी गई है।

## दिल्ली में फिर बढ़े नए मामले, महाराष्ट्र में सबसे अधिक मौतें

नई दिल्ली, जेएनएन। कोरोना के खिलाफ जंग में भारत को एक और सफलता मिली है। लगातार मरीजों की निगरानी, जांच में वृद्धि, संक्रमितों के संपर्क में आने वाले लोगों की पहचान और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के बल पर भारत डेढ़ महीने बाद पहली बार सक्रिय मरीजों की संख्या को आठ लाख से नीचे लाने में कामयाब रहा है। प्रतिदिन नए मामलों से ज्यादा संख्या में मरीज ठीक हो रहे हैं लेकिन राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बढ़ते नए मामलों ने चिंता बढ़ा दी है। समाचार एजेंसी पीटीआइ की तरफ से शनिवार रात 10 बजे जारी टैली के मुताबिक, बीते 24 घंटों के दौरान 58,191 नए केस मिले हैं, 67,092 मरीज ठीक हुए हैं और 1,057 लोगों की मौत हुई है। करीब दो हफ्ते बाद अचानक मरने वालों की संख्या एक हजार से

अधिक हुई है। इसके साथ ही कुल संक्रमित 74.85 लाख हो गए हैं और अब तक 65.83 लाख मरीज ठीक हुए हैं और 1,13,983 लोगों की मौत भी हो चुकी है। सक्रिय मामले 7.87 लाख रह गए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक मरीजों के उबरने की दर बढ़कर 87.78 फीसद हो गई है। मृत्युदर 1.52 प्रतिशत पर आ गई है। सरकार की ओर से जारी सुबह आठ बजे जारी आंकड़ों के मुताबिक, कुल संक्रमितों की संख्या 74.32 लाख, कोरोना को मात दे चुके मरीजों का आंकड़ा 65.24 लाख और महामारी से जान गंवाने वालों की संख्या 1.12 लाख हो गई है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के मुताबिक कोरोना संक्रमण का पता लगाने के लिए शुरुआत को 9.99 लाख नमूनों का परीक्षण किया गया। इनको

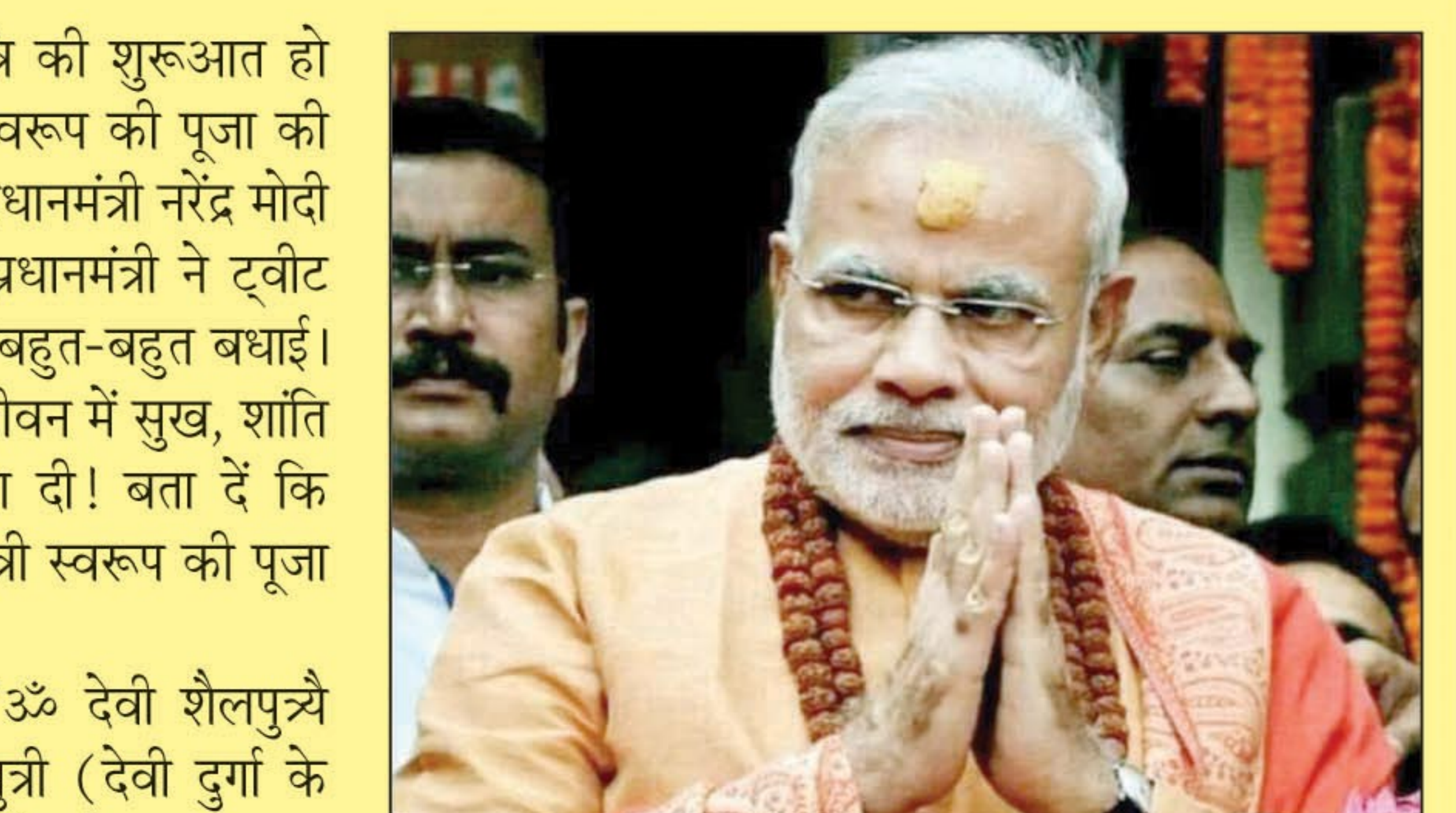


मिलाकर 16 अक्टूबर तक कुल 9.32 करोड़ सैपल्स टेस्ट किए जा चुके हैं। कोरोना महामारी से भारत में सबसे ज्यादा मौतें महाराष्ट्र में हुई हैं। इनकी संख्या 41,965 है। इसके बाद तमिलनाडु में 10,586, कर्नाटक में 10,427, उत्तर प्रदेश में 6,629, आंध्र प्रदेश में 6,406, दिल्ली में 5,981, बंगाल में 5,992, पंजाब में 3,9990 और गुजरात में 3,629 लोगों की अब तक इस महामारी से जान जा चुकी है।

देश की राजधानी दिल्ली में फिर तीन हजार से अधिक नए केस मिले हैं। 3,259 नए मामलों के साथ कुल मरीजों की संख्या 3.27 लाख हो गई है। लेकिन महाराष्ट्र में मरीजों की संख्या कम हुई है। राज्य में 10,259 नए मामलों के साथ कुल संक्रमित 15.86 लाख हो गए हैं। राज्य में 250 लोगों की मौत भी हुई है। केरल में संक्रमण का प्रसार नहीं रुक रहा है। राज्य के अधिकारियों की मदद के लिए केंद्र ने एक टीम भी भेजी है। राज्य में नौ हजार से अधिक नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों का आंकड़ा बढ़कर 3.32 लाख हो गया है। 26 लोगों की मौत भी हुई है। हालांकि, दक्षिण भारत के अन्य राज्यों में स्थिति कुछ ठीक है। आंध्र प्रदेश में अब तक 7.76 लाख और तेलंगाना में 2.20 लाख संक्रमित अब तक मिल चुके हैं।

## पीएम मोदी ने देशवासियों को दी नवरात्रि की बधाई बोले- मां के आशीर्वाद से मिलती है शक्ति

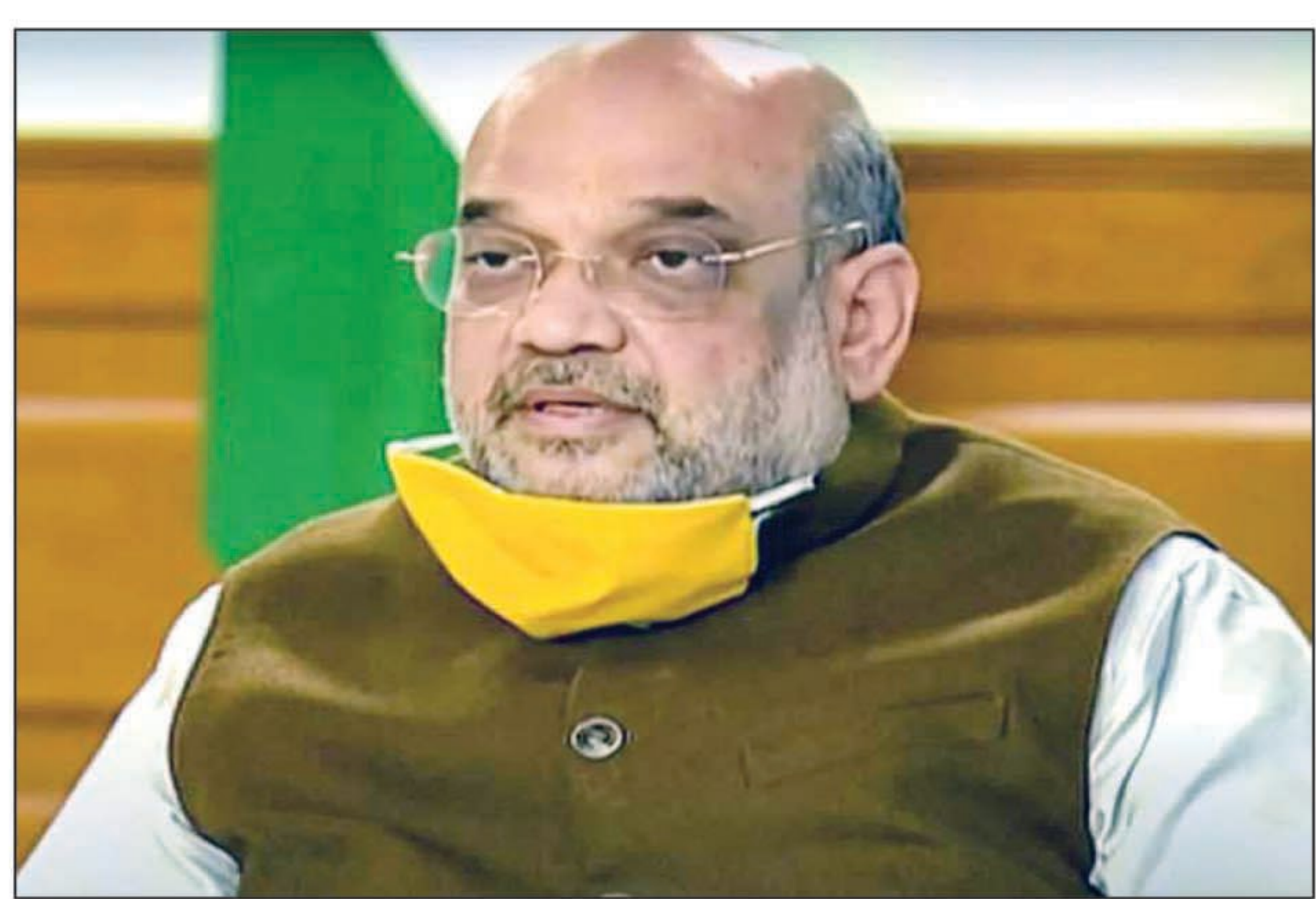
नई दिल्ली, एएनआइ। शारदीय नवरात्रि की शुरुआत हो गई है। इन नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूप की पूजा की जाती है। नवरात्रि के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं। प्रधानमंत्री ने ट्वीट कर कहा कि नवरात्रि के पावन पर्व की बहुत-बहुत बधाई। जगत जननी मां जगदंबा आप सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का संचार करें। जय माता दी! बता दें कि नवरात्रि के पहले दिन मां दुर्गा के शैलपुत्री स्वरूप की पूजा होती है।



एक अन्य ट्वीट में उन्होंने कहा, 'ॐ देवी शैलपुत्री नमः। नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री (देवी दुर्गा के प्रथम रूप) को प्रणाम। उनके आशीर्वाद से हमारा ग्रह सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध हो सकता है। उनके आशीर्वाद से हमें गरीबों के जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लाने की शक्ति मिलती है।' गृह मंत्री अमित शाह ने भी देशवासियों को नवरात्रि की बधाई दी। उन्होंने लिखा- हनुवतरात्रि तप, साधना और शक्ति उपासना का प्रतीक है। नवरात्रि के महापर्व की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। मां भगवती सभी पर अपनी कृपा व आशीर्वाद बनाये रखें। जय माता दी! नवरात्रि के महापर्व की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। मां भगवती सभी पर अपनी कृपा व आशीर्वाद बनाये रखें। जय

## अमित शाह ने कहा- चिराग खुद राजग से गए बाहर नीतीश ही होंगे बिहार में एनडीए के मुख्यमंत्री

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली। राजग से अलग होते हुए भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर चुनावी बाजी सजा रहे लोजपा और उसकी ओर आकर्षित होने वाले मतदाताओं के हर भ्रम को दूर करने में भाजपा जुट गई है। प्रधानमंत्री खुद चुनावी अभियान में उतरें उससे पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भी स्पष्ट कर दिया कि लोजपा खुद राजग से बाहर गयी है। फिलहाल तो लोजपा राजग के खिलाफ मैदान में है। राजग में सिर्फ चार दल हैं और सभी इकट्ठे एक दूसरे को जिताने में जुटेंगे। अमित शाह ने एक मीडिया से बातचीत में साफ किया कि लोजपा अध्यक्ष चिराग पासवान से बातचीत तो हुई थी, उन्हें कई बार प्रस्ताव दिया गया, यह भी बताया गया कि



कोई बात है तो बातचीत हो सकती है, लेकिन बात नहीं बनी। उन्होंने कहा- 'इस बार के चुनाव में जदयू के रूप में नया साथी जुड़ा है तो सबकी सीटें कम होंगी तय थी। भाजपा भी कम सीटों पर लड़ रही

है। चिराग पासवान के साथ बात नहीं बन पाई।' प्रस्तावित सीटों की संख्या बताने से इनकार करते हुए शाह ने एक सवाल के जवाब में कहा- 'चुनाव में राजग तीन चौथाई सीट जीत कर सरकार बनाएगा..

चिराग खुद राजग छोड़कर गए हैं। चिराग के वापस राजग में शामिल होने के सवाल पर उन्होंने कहा- चुनाव के बाद की बात क्या होगी वह बाद में, लेकिन वर्तमान राजग बहुमत लेकर आएगा। राजग के मुख्यमंत्री चेहरे नीतीश कुमार के खिलाफ चिराग के बयानों का संकेत देते हुए शाह ने कहा कि उनकी ओर से इस्तरफा बयान आये थे जिसकी प्रतिक्रिया हुई लेकिन भाजपा फिर भी साथ रखने का हर प्रयास कर रही थी। जाहिर है कि शाह ने पूरा ठीकरा चिराग पर फोड़ दिया है। अमित शाह ने उन अटकलों पर भी विराम लगा दिया कि राजग गठबंधन में भाजपा की अधिक सीटें आने के बाद नीतीश कुमार मुख्यमंत्री नहीं होंगे। शाह ने साफ कर दिया कि राजग गठबंधन नीतीश

कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ रहा है और उनके मुख्यमंत्री बनने का सीटों से कोई संबंध नहीं है। उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए गठित लोकपाल को 2019-20 में कुल 1,427 शिकायतें मिलीं। उन्होंने कहा कि वे खुद भाजपा अध्यक्ष रहते हुए और अब जेपी नड्डा बार-बार नीतीश कुमार के नेतृत्व में राजग के चुनाव लड़ने की बात कह चुके हैं। उन्होंने कहा कि 'इसमें कोई दो राय नहीं है, कोई दि मत नहीं है। जो कोई भी भ्रष्टाचार फैलाने की कोशिश कर रहा है, मैं उस पर आज फुलस्टॉप लगाने जा रहा हूँ।' सीजेआई बोबडे ने कहा है कि देश की अदालतों में अभी आम दिनों की तरह सुनवाई संभव नहीं है।



## संक्षेप समाचार

## नवरात्र के पहले दिन पूजा गई शैलपुत्री

करछना। शनिवार को नवरात्र के पहले दिन क्षेत्र के देवी शक्तिपीठों और पूजा पाड़ालों में मा शैलपुत्री की पूजा अर्चना की गई। करछना समेत कौवा, पचदेवरा, डीहा, बसही घटवा गंधिया बरवड़ा बेदौ सहित कई प्रमुख बाजारों में पाड़ालों में स्थापित मां शैलपुत्री की भक्तों ने पूजा अर्चना की। कोविड 19 के बावजूद लोगों ने उत्साह से कोई कमी देखी पाड़ालों को सजाने में लोगों को कड़ी मशक्त करनी पड़ी। क्षेत्र के मनुष्यक मनैया और डीहा में भक्तों ने डुबकी लगाकर मा की आराधना में भक्त जुटे वहीं पाड़ालों में भी मूर्ती स्थापित कर पूजन अर्चना में भक्त जुटे रहे साथ ही थाना प्रभारी ने सभी पूजा पडाल आयोजकों से शासन के दिशा निदेशों का पूरी तरह से पालन करने की अपील की है।

## अवैध तमंचा का कारखाना सहित दो अभियुक्त पकड़ाए

घूरपुर। घूरपुर पुलिस व यमुनापार एसओजी की संयुक्त टीम ने शुक्रवार की रात दो शांतिरों को पकड़ उनके पास से अवैध असलहे बरामद करते हुए अवैध असलहे के कारखाने का खुलासा किया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को पकड़ जेल भेज दिया है।

घूरपुर थाना के एसएसआई वीरेंद्र प्रताप सिंह व एसओजी यमुनापार प्रभारी वृंदावन राय अपनी अपनी टीम लेकर शुक्रवार की रात इलाके के सुजावन देव मंदिर के रास्ते पर संदिग्धों की जांच पड़ताल कर रहे थे। इसी बीच दो संदिग्ध व्यक्ति पुलिस टीम को दिखाई दिए तो पुलिस ने दोनों को रोक लिया और तलाशी ली तो उनके पास से कई अवैध तमंचे बरामद हुए। पुलिस ने दोनों को कारा किया तो दोनों ने असलहा बनाने और उसे अन्य प्रांतों में बेचने की बात स्वीकार कर ली। पुलिस टीम के अनुसार दोनों को उनके घर चिल्ला



बरमद तमंचे व मामले का खुलासा करते पुलिस अधिकारी

## तीन से पांच हजार में बेचता था तमंचा

पुलिस ने बताया कि पकड़े गए दोनो अभियुक्त तीन से पांच हजार रुपए में एक तमंचा बेचते थे। हर महीने अपने कारखाने का अड्डा बदल देते थे। ग्राहकों से एडवांस में रुपए लिया करते थे। इनके टीम में कई लोग शामिल हैं।

गौहनी थाना लालापुर ले जाया गया तो उनके घर से अवैध असलहे व दर्जनों बनाने के कारखाना पकड़ा गया। दो 315 बोर के तैयार तमंचे व दो 12

बोर के तैयार तमंचे के साथ कई अर्धनिर्मित असलहे व दर्जनों कारतूस सहित उपकरण बरामद हुए।



## बिहार में हो रहे चुनाव के लिए तैयार किये जा रहे थे असलहे

पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि पकड़े गए दोनो आरोपियों सुग्रीव नट पुत्र चंदन नट व उसके भतीजे रमेश कुमार पुत्र विजय नट ने पूँछताँछ में बताया कि बिहार में विधानसभा चुनाव के लिए भारी मात्रा में असलहों का आर्डर था। जिसकी तैयारी की जा रही थी। जिसकी भनक लगते ही दोनो को पकड़ लिया और जेल भेज दिया गया। स्थानीय क्षेत्र में भी कई वर्ष से तमंचा बनाकर बेचने का कार्य करता रहा है।

## हाईकोर्ट समाचार

## चार्जशीट दाखिल होने के बाद भी अग्रिम जमानत पर हो सकती है सुनवाई : हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि किसी मुकदमे में भी आरोपपत्र दाखिल होने के बाद भी अग्रिम जमानत अर्जी पर सुनवाई की जा सकती है। कोर्ट ने प्रयागराज के विनय कुमार शुक्ला की अग्रिम जमानत पर सुनवाई करते हुए अगले छह माह तक उसके खिलाफ उपरीदनात्मक कार्रवाई नहीं करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा ने याची के अधिवक्ता की दलीलों को सुनने के बाद दिया। याची के खिलाफ उसकी पत्नी ने प्रयागराज के महिला थाने में दहेज उतपीड़न का मुकदमा दर्ज कराया है। इसमें गिरफ्तारी से बचने के लिए उसने हाईकोर्ट में अग्रिम जमानत अर्जी दाखिल की। सरकारी अधिवक्ता ने यह कहते हुए अर्जा का विरोध किया कि इस मामले में आरोप पत्र दाखिल हो चुका है। जबकि याची के अधिवक्ता ने सिद्धार्थ वरदराजन बनाम उत्तर प्रदेश राज्य के केस में हाईकोर्ट द्वारा दिए निर्णय का हवाला देते हुए कहा है कि चार्जशीट दाखिल होने के बाद भी अग्रिम जमानत पर सुनवाई हो सकती है। कोर्ट ने इस दलील को स्वीकार करते हुए कहा कि मामला पति-पत्नी के बीच का है इसलिए इसे सुलह समझौते से तय करने का प्रयास करना चाहिए। कोर्ट ने मामले को हाईकोर्ट मीडिएशन सेंटर भेजते हुए मध्यस्थता से पति-पत्नी का विवाद सुलह समझौते से छह माह में तय करने के लिए कहा है। याचिका पर छह माह बाद सुनवाई होगी। तब तक याची के खिलाफ किसी भी प्रकार की उपरीदनात्मक कार्रवाई नहीं करने का निर्देश दिया है।

## जमीन बेचने के नाम पर धोखाघड़ी करने के आरोपी की जमानत खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जमीन बेचने के नाम पर धोखाघड़ी कर लाखों रुपये की रकम हड़प कर जाने के आरोपी सिद्धार्थनगर के सेराज अहमद की जमानत अर्जी खारिज कर दी है। सेराज के खिलाफ सिद्धार्थनगर के थाने में धोखाघड़ी का मुकदमा दर्ज है, जिसमें वह जेल में बंद है। उसकी जमानत अर्जी पर न्यायमूर्ति सिद्धार्थ ने सुनवाई की। याची पर आरोप है कि उसने जमीन की खरीद फरोख्त का कारोबार करने वाले शिकायतकर्ता से एक जमीन का 17 लाख रुपये में सौदा किया। प्रापटी डीलर को उसने सोनम नाम की महिला पर न्यायमूर्ति सिद्धार्थ से सौदा करवा दिया है। दो लाख रुपये एडवांस में दिया गया। बाद में याची ने प्रापटी डीलर को सोनम के नाम से एक्सिस बैंक के दो खातों में सारे 13 लाख रुपये और चार लाख 82 हजार रुपये मंगवाए। शिकायतकर्ता ने रकम बैंक खाते में ट्रांसफर कर दी। लेकिन जब वह जमीन की रजिस्ट्री कराते गया तो वहां कोई नहीं पहुँचा। सोनम से संपर्क करने पर उसने बताया कि उसे कोई रकम नहीं मिली और न ही उसका एक्सिस बैंक में कोई खाता है। आरोप है कि याची ने फर्जी बैंक एकाउंट खोल कर रकम हड़प कर ली। याची का कहना था कि उसने कोई बैंक एकाउंट नहीं खोला है और न ही रकम ली है। मामले में याची की मुख्य भूमिका को देखते हुए कोर्ट ने जमानत अर्जी नामजूर कर दी।

## अधिग्रहण बाद भूमि खरीदने वाले को मुआवजा पाने का अधिकार नहीं : हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि भूमि अधिग्रहण की अधिसूचना जारी होते ही जमीन सरकार में निहित हो जाती है। अधिग्रहीत भूमि खरीदने या बेचने का किसी को अधिकार नहीं है। ऐसे में अधिग्रहीत भूमि खरीदने वाले को मुआवजा पाने का भी अधिकार नहीं है। कोर्ट ने इस तर्क को नहीं माना कि याचिका में अधिग्रहण को चुनौती नहीं दी गयी है। केवल मुआवजे की मांग की गयी है। जमीन खरीदने वाले को मुआवजा पाने का अधिकार है। कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के विपिन अग्रवाल केस में स्थापित विधि सिद्धांत को अपनाते हुए मुआवजा दिलाने की मांग में दाखिल याचिका शनिवार को खारिज कर दी। यह आदेश न्यायमूर्ति एम एन भंडारी तथा न्यायमूर्ति पीयूष अग्रवाल को खंडपीठ ने अजय कुमार श्रीवास्तव की याचिका पर दिया है। याचिका पर अधिवक्ता सत्येन्द्र नाथ श्रीवास्तव व भारत सरकार के अधिवक्ता गौरव कुमार चंद ने बहस की। राष्ट्रीय राजमार्ग चौदिकरण के लिए जमीन अधिग्रहीत की गयी। अधिग्रहण की अधिसूचना जारी कर दी गयी। इसके बाद भूमि स्वामी से याची ने बैनाना करा लिया और मुआवजे के लिए आवेदन किया और कहा कि उसने जमीन खरीद ली है। इसलिए मुआवजा उसे ही दिया जाय। एडीएम गाजीपुर ने 7 दिसम्बर 19 को यह कहते हुए अर्जी खारिज कर दी कि अधिग्रहण के बाद सरकार की जमीन की विक्री खरीद मान्य नहीं है। जिसे याचिका में चुनौती दी गयी थी।

## नवरात्रि में बेटियों को बचाने एवम आगे बढ़ाने का संकल्प लें समाज : लक्ष्मी शंकर तिवारी

करमा। नवरात्रि के पवित्र अवसर पर समाज के सभी प्रबुद्ध वर्ग आगे आकर समाज में दिग्विजय बड़े रहें महिलाओं के प्रति अपराधों को खत्म करने में अपना संयोग प्रदान करें क्योंकि नवरात्रि की पूजा वधी सफल एवम सार्थक मानी जाएगी जब लोगों के द्वारा बेटियों को सम्मान एवम सुरक्षा प्राप्त होगी उक्त अजोस्वी विचार अधिवक्ता जगद्वन न्यायलय प्रयागराज एवम पूर्व प्रधानसच अर्धक्ष चाका श्री लक्ष्मी शंकर तिवारी के हैं श्री तिवारी नवरात्रि शुभारंभ के पवित्र अवसर पर लोगों से महिलाओं के प्रति शिष्टाचार एवम सम्मान प्रदान करने के लिए निवेदन भी किये श्री तिवारी ने समाज से बेटियों को पढ़ाने एवम आगे बढ़ाने के लिए भी प्रेरित किये अपने उदबोधन में उन्होंने यह भी कहा कि स्त्री को सम्मान देना भी एक नेक एवम पुण्यकार्य की श्रेणी में आता है इन्से महाशक्तियों की कृपा अतिशय प्राप्त होती है। सूत्रों के मुताबिक श्री तिवारी काफी धार्मिक होने के साथ सदैव लोगों की भलाई में तत्पर रहते हैं।

## बालिका की सिर कूचकर निर्मम हत्या

कोरांव। इस समय उत्तर प्रदेश में बलात्कार हत्या लूट की घटनाएं आम हो गई हैं। उसी क्रम में थाना कोरांव क्षेत्र के ग्राम गजाधरपुर में एक दलित 9 वर्षीय बालिका की केला व्यापारी ने ईट व पत्थर से कूच-कूच कर निर्मम हत्या कर दी। बालिका के शव को बोरे में भरकर नहर में फेंकते समय बालिका की चाची ने रंगी हाथ पकड़ लिया और 112 नंबर की पुलिस को सूचित कर ग्रामीणों ने अपराधी को रंगी हाथ लाश सहित पुलिस को सुपुर्द कर दिया।

निर्मम हत्या के बाद परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल था इस जघन्य अपराध से पूरे क्षेत्र में सप्तसनी फैल गई है। परिजनों ने बताया कि उक्त बालिका शुक्रवार शाम 7 बजे सड़क पर खेल रही थी कि मिर्जापुर से आकर पचेड़ा ससुराल में बसे केला व्यापारी शिशाराम गौड़ उम्र लगभग 50 वर्ष बालिका को बहला-पुसलाकर ले गया। और बालिका की



बालिका की निर्मम हत्या के बाद गमजदा परिजन

गला दबाकर निर्मम हत्या कर दी। बाद में उसके सिर व मुंह को पत्थर से कूच दिया और शव को भूसे में

रखकर बोरे में भर कर नहर में फेंकने जा रहा था उसी समय मृतका की चाची मनीता कोल हंडपम्प पर

पानी लेने गयी तो देखा कि सियाराम अपने कंधे पर बोरे में कुछ भरकर नहर में फेंकने जा रहा है। तो उसने

शोर मचा दिया और उसे पकड़कर बोरे को खुलवाया तो पता चला कि सायं सात बजे से गायब नेहा कोल पुत्री लवकुश कोल निवासी गजाधरपुर की लाश थी। लाश खून से लतपथ थी और चोट के काफी निशान थे वस्त्र फटे हुए थे। मृतका की मां संतोसा देवी व दादी तथा परिजनों ने बताया कि पांच बच्चों में तीसरे नंबर की नेहा थी। मां ने बताया कि उक्त अपराधी ने बेटी के साथ बेरहमी से दुष्कर्म के बाद हत्या किए जाने व लाश को गायब कर नहर में फेंके जाने के प्रयास में उसे पुलिस प्रशासन कड़ी से कड़ी सजा दिलाये ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

घटना स्थल पर मिस्कीन सेवा संस्थान की महिला प्रतिनिधि श्रीमती प्रेमकली की टीम व पत्रकारों का एक प्रतिनिधि मंडल पहुंच कर घटना का जांचका लिया जहाँ उपरोक्त बातें सत्य पाई गईं। और पीड़ित परिजनों से

मुलाकात कर बात चीत की। प्रेम कली ने घटना की निंदा करते बलात्कारी व हत्यारे को कड़ी सजा देने की बात कही। क्षेत्रीय चर्चाओं पर गौर करें तो मिर्जापुर से आए बलात्कारी आरोपी के विरुद्ध मिर्जापुर में भी हत्या जैसे जघन्य अपराधों में कई मामले दर्ज हैं। पचेड़ा में भी अपनी ससुराल में रुक कर घटनाओं को अंजाम देने का काम करता रहता है। इस घटना की पूर्व विधायक राजबली जैशल व रामकृपाल कोल ने भी निंदा की है। और कोरांव में पुलिस की निष्क्रियता और सरकार पर सवाल खड़े किए हैं। हालांकि पुलिस बालिका का शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है आरोपी शिशाराम गौड़ को गिरफ्तार कर लिया है। हालांकि इस मामले में पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम के बाद ही हत्या का सही कारण स्पष्ट हो पायेगा। हर एक एंगिल से आरोपी से पूछताँछ कर रही है।

## बीजेपी सरकार हर मोर्चे पर विफल : प्रमोद तिवारी

सिरसा। मेजा क्षेत्र में 2022 भाजपा के जाने का और कांग्रेस के सरकार में आने का विधान सभा चुनाव है। उक्त उद्गार कांग्रेस पार्टी के पूर्व कैबिनेट मंत्री, सांसद प्रमोद तिवारी ने शारदीय नवरात्र के प्रथम दिन विध्याचल दर्शन के लिए जाते समय मेजारोड चौराहे पर उपस्थित कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किया है-होने ने कहा कि बीजेपी सरकार हर मोर्चे पर विफल हो चुकी है। इस सरकार में अपराध का बोल बाला है। और महंगाई से लोग ब्याकुल हो गए हैं। बीजेपी सरकार गरीबों की ना रहकर अमीरों की बन गयी हैं। पुलिस प्रशासन लुंज पुंज हो चुकी है। सरकार ने आगे प्रशासन के ऊपर से लोगों का विश्वास उठ चुका है। आये दिन हर जिले में कोई न कोई अग्रिय घटना हो रहा है। तिवारी ने आगे कहा कि प्रयागराज के यमुनापार से नेहरू व गांधी परिवार का गहरा लगाव



सांसद प्रमोद तिवारी का स्वागत करते कार्यकर्ता

रहा है। प्रियंका गांधी ने बूध स्तर पर मजबूती से डटे रहने वाले जुझारू कार्यकर्ता अरुण तिवारी पर विश्वास करते हुए यमुनापार का जिलाध्यक्ष बनाया है, इनके साथ पूरी कांग्रेस पार्टी का समर्थन है। इससे पहले मेजारोड चौराहे पर कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी का जोरदार स्वागत कांग्रेस के जिला अध्यक्ष अरुण तिवारी के

नेतृत्व में किया गया। इस मौके पर मुख्य रूप से राम छबीले मिश्रा, त्रिपुरारी मिश्रा, केके तिवारी, अतुल तिवारी, दिनेश तिवारी, दिनेश सोनी, नागेश पांडेय, सत्यम पांडे, नारायण दुवे, टिकू उपाध्याय, शशि शुक्ला, शाह रूमान अहमद, अतुल कर्नाजिया, मुन्ना मिश्रा समेत भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

## नवरात्र पर स्नानार्थियों का उमड़ा रेला, घूरपुर बाजार के हाईवे पर घंटों लगा रहा भीषण जाम

## हजारों श्रद्धालुओं ने सुजावन देव यमुना तट पर लगाई डुबकी

घूरपुर। नवरात्र के प्रथम दिन स्नानार्थियों का इस कदर भीड़ उमड़ी की घूरपुर बाजार के हाईवे पर जहां घंटों भीषण जाम लगा रहा वहीं घूरपुर-लालापुर मार्ग पर दिन भर जाम के झाम से राहगीर जूझते रहे।

शनिवार को नवरात्र का प्रथम दिन था। प्रतिवर्ष की भांति सुजावन देव मंदिर के यमुना तट पर भारी संख्या में श्रद्धालु स्नान को जाते हैं। शनिवार के दिन भीर से ही क्षेत्रीय श्रद्धालुओं का रेला उमड़ा तो घूरपुर बाजार हाईवे से लेकर घूरपुर - लालापुर मार्ग तक भीषण जाम लग गया। जाम इस



घूरपुर बाजार के हाईवे पर जाम में फंसे राहगीर व श्रद्धालु

कदर लगा कि पैदल राहगीरों को निकलना मुश्किल हो गया। वहीं मध्य प्रदेश सहित दूर दराज के लोग भारी संख्या में निजी वाहनों से संगम स्नान को निकले थे कि जाम में कई घंटों बुरी तरह फंसे रहे। दो घंटे से अधिक भीषण जाम लग जाने से बड़े छोटे वाहनों

की सड़क के दोनों तरफ वाहनों की कतार लग गए। जिससे श्रद्धालु हलाकान रहे। भीषण जाम से निजात दिलाने के लिए स्थानीय पुलिस ने हाईवे को चन्ने कर जाम से निजात दिलाई तब जाकर पूर्व की भांति यातायात शुरू हो सका।

## तनी चला बबुनी गंडआ के सिवनवां में...

## अन्तर्राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों, जवानों के नाम रहा लोक-मंगल संस्थान कार्यक्रम

करछना। अन्तर्राष्ट्रीय किसान दिवस के मौके पर रामपुर स्थित लोक-मंगल संस्थान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कलाकारों द्वारा प्रस्तुत लोकगीतों ने किसानों की व्यथा बयां करते हुए गांव के अस्तित्व को जीवन्त किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि रहे प्रदेश सरकार में मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह के मीडिया प्रभारी दिनेश तिवारी, कार्यक्रम की अध्यक्षता सरकार द्वारा प्रस्तुत किसान शोभानाथ शुक्ल और संचालन वरिष्ठ कवि राजेन्द्र शुक्ल ने किया। रामभोर मिश्रा ने किसान वन्दना के उपरान्त प्रस्तुत गीत, बबुनी आवा लुली गंडआ के सिवनवां में, मन चुलाई जाला खेत और किसानों में, गाकर खूब समां बांधी। त्रिभुवन नाथ गौड़, मोनू मस्ताना, वृजेश तिवारी के विकास गीतों में



लोकगीतों का आनंद उठाते लोग

खेती किसानों, गांव गिराव का लोकरंग जीवन्त हुआ तो वहीं कवि लखन प्रतापगढ़ी, संजय पाण्डेय सरस, अजीत पाण्डेय, की कविताओं में किसान की व्यथा मुखरित हुई। संस्थान के निदेशक डॉ भगवत पाण्डेय ने सभी का स्वागत करते हुए किसान को धरती के भगवान की संघ्या दी और गांव की पहचान कायम रखने पर जोर दिया। प्रधानाचार्य लोककवि

रामलोचन सांवरिया ने कहा कि अपनी माटी और इसकी सौंधी गंध को संजोने वाले किसान जाना किसी देवता से कम नहीं। इस मौके पर महाकवि त्रिफला, लवकुमार पाण्डेय, तीर्थराज, नारायण दत्त, श्यामलाल बेगाना, रामबाबू यादव, सबरज अहमद, सुनील प्रजापति विजय पाल, रजत, मानिक चन्द्र, सहित कई लोग मौजूद रहे।

## जुआड़ियों के फड़ पर पहुंची पुलिस, मचा हड़कंप दो गिरफ्तार

करछना। थाना क्षेत्र के निवेद्या मझियारी गांव में कई महीने से जुआड़ियों की फड़ जमती थी मुखरि की सूचना पर शुक्रवार शाम पहुंची करछना पुलिस मौके पर दो लोगों को गिरफ्तार किया अन्य कई साथी भागने में सफल रहे वहीं जुआड़ियों ने पकड़े जाने पर पुलिस के साथ अश्रुदा की तथा उल्टा पुलिस को फत्साने के लिए पेट्रोल डालकर आत्मदाह करने का प्रयास किया जिसे समय रहते बचा लिया गया निवेद्या गांव के रहने वाले अमित सिंह व अतुल सिंह पुत्रगण धर्मपाल सिंह अपने घर के पास कई महीनों से जुआ खेलावते थे और जीतने वाले से पैसे की अच्छी खासी वसूली की जाती थी, जिसकी जानकारी पुलिस को भी थी लेकिन पुलिस चाहकर भी जुआड़ियों को नहीं पकड़ती थी क्योंकि जिस जगह जुआ होती थी वहां आस-पास बस्ती होने के कारण पुलिस नहीं पहुंच पाती थी जिसके कारण बेजोफ होकर जुआड़ी जुआ खेलते थे और गांव के लोग चाहकर भी उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाते थे लेकिन शुक्रवार को अवानक चौकी प्रभारी भुण्डा पवन सिंह मौके पर पहुंचे जहा जुआड़ी पुलिस को देखते ही भागने लगे लेकिन जुआ खेलावने वाला सरगना अमित सिंह पुलिस से दबाई करते हुए बोतल में पेट्रोल निकालकर खुद को आग लगाने का प्रयास किया लेकिन पुलिस ने उसे दौडाकर पकड़ लिया।

## मऊआइमा के बुनकरों ने निकाला मौन जुलूस

मऊआइमा। फ्लैट रेट में बिजली देने की सरकार से की जा रही मांग न पूरी होने पर बुनकर अपने पावरलूम कारखानों में 15 अक्टूबर से ताला बंदी किए हुए हैं। शनिवार को बुनकरों ने विभिन्न प्रकार के स्टोलन लिखे मुंह में मारकर लगाए मौन जुलूस निकालकर सरकार को चेतावनी दी।

उत्तर प्रदेश बुनकर महा सभा के आह्वान पर फ्लैट रेट में बिजली देने तथा मीटर बिलिंग बंद करने आदि विभिन्न मांगों को लेकर 15 अक्टूबर से प्रदेश के समस्त बुनकर अपने पावरलूम कारखानों में अनिश्चितकालीन ताला बंदी किए हुए हैं। मऊआइमा पावरलूम एवं बुनकर महा सभा के अध्यक्ष हाजी मो शौए अंसारी, फारुक अंसारी, सलीम अंसारी, वासिक अंसारी, हारिम अंसारी, बन्ने, दानिश अंसारी आदि दर्जनों बुनकर हाथों में तख्ती लिए हुए। जिसमें सरकार से बिजली फ्लैट रेट में देने की मांग को लेकर मऊआइमा करवा में मौन



मौन जुलूस निकालते बुनकर

जुलूस निकाल कर अपना विरोध प्रकट किए। बुनकर नेता पूर्व चेयरमैन हाजी मोहम्मद शौएब अंसारी ने कहा है कि यदि सरकार

पूर्व की भांति बिजली फ्लैट रेट में नहीं देती तो उनका धरना प्रदर्शन धीरे धीरे विकराल रूप धारण कर लेगा। बता दें कि पूरे प्रदेश के पावरलूम बुनकर हडताल पर हैं। मऊआइमा में दस हजार पावरलूम हैं। जिससे हजारों लोगों की रोजी रोटी जुड़ी हुई है।



# प्रयागराज हलचल

प्रयागराज रविवार, 18 अक्टूबर, 2020

## संक्षेप समाचार

### कक्षा नौ एवं ग्यारह में प्रवेश की तिथि बढ़ी

प्रयागराज। माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ.प्र द्वारा शैक्षिक सत्र 2020-21 के कक्षा 9 एवं 11 के संस्थागत अभ्यर्थियों के विद्यालयों में प्रवेश पंजीकरण शुल्क प्राप्त करने-आनलाइन पंजीकरण कराने की पूर्व निर्धारित तिथियों को संशोधित किये जाने की अनुमति प्रदान कर दी है। प्रयागराज के सचिव दिव्य कान्त शुक्ला ने सभी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को निर्देशित किया है कि कक्षा 9 एवं 11 के अंतिम पंजीकरण अभ्यर्थियों के प्रवेश लेने एवं आनलाइन अपलोड कराये जाने सम्बन्धी कार्यवाही सुनिश्चित कराएँ। उन्होंने बताया है कि संस्था प्रधान द्वारा कक्षा 9 एवं 11 में प्रवेश लेने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर, पंजीकरण शुल्क पचास रुपए प्रति छात्र की दर से चालान के माध्यम से कोषागार में एकमुश्त जमा करने व छात्रों के शैक्षिक विवरणों को परिषद की वेबसाइट पर आनलाइन अपलोड करने की अंतिम तिथि 15 नवम्बर, संशोधन 20 नवम्बर तक तथा अभ्यर्थियों की फोटोयुक्त नामावली आदि परिषद के क्षेत्रीय कार्यालयों में जमा कराने की अंतिम तिथि 25 नवम्बर है।

# सांसद ने 'मिशन शक्ति' अभियान का हरी झण्डी दिखाकर किया शुभारम्भ

**'मिशन शक्ति' का अभियान सतत चलते रहना चाहिए : केशरी देवी पटेल**

प्रयागराज। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगीजी ने महिलाओं की सुरक्षा एवं सम्मान के लिए लोगों को जागरूक करने हेतु 'मिशन शक्ति' का जो अभियान प्रारम्भ किया है, उसे सतत चलते रहना चाहिए। मिशन शक्ति के रूप में महिलाओं की सुरक्षा एवं सम्मान बढ़ाने एवं सुरक्षित रखने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री द्वारा अभियान का शुभारम्भ किया गया। लड़के और लड़की में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

उक्त विचार फूलपुर सांसद केशरी देवी पटेल ने जनपद में नारी सुरक्षा, नारी सम्मान एवं नारी स्वावलम्बन हेतु जन जागरूकता अभियान हेतु 180 दिन तक



एलईडी वैन रवाना करती सांसद व अन्य

चलने वाले मिशन शक्ति जन जागरूकता कार्यक्रम के लिए एलईडी वैन को हरी झण्डी

दिखाकर रवाना करने के उपरान्त शनिवार को एमएनआईटी परिसर में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त

किया। उन्होंने कहा कि सभी संकल्प ले कि हम देहेज नहीं लेगे। कहा कि कई क्षेत्रों में बेटियां

बेटों से आगे है। महिलाओं का सभी लोग आदर करें। बेटे और बहू में कोई अंतर नहीं होना

चाहिए। कहा कि बेटे बचाओ बेटे पढ़ाओ अभियान भी चलाया जा रहा है, जिसके द्वारा लड़कियों को आगे बढ़ने में मदद मिल रही है।

जिलाधिकारी भानु चन्द्र गोस्वामी ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा मिशन शक्ति अभियान का आज शुभारम्भ किया गया है। इसी क्रम में जनपद में भी आज शुभारम्भ हुआ है। उन्होंने कहा कि यह अभियान अगले छह महीने तक चरणबद्ध रूप से चलता रहेगा। कहा कि मिशन शक्ति का उद्देश्य लोगों को जागरूक करना है। समाज के चिंतन को बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लैंगिक समानता के बारे में लोगों को जागरूक करें। जिलाधिकारी ने विभिन्न क्षेत्रों की महिला रोल माडल महिलाओं को प्रशस्ति पत्र एवं मोमेटो देकर सम्मानित भी किया। इस दौरान अमिता सिंह, ज्योत्सना सिंह, सुनीता श्रीवास्तव,

सावित्री राय, नित्या निमानी, प्रमिला पटेल, अर्चना सिंह, अनिता सिंह, डॉ. मंजू सिंह, जागृति गुप्ता, डॉ. चन्द्रना मुखर्जी, सोनाली चक्रवर्ती, डॉ. निमिषा नटराजन, डॉ. नीता साहू सहित अन्य वक्ताओं ने नारी सुरक्षा, नारी सम्मान एवं नारी स्वावलम्बन को बढ़ाने के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रभाकर त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में एडीजी जॉन प्रेम प्रकाश, आईजी केपी सिंह, विरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी, मुख्य विकास अधिकारी आशीष कुमार, उप निदेशक कृषि विनोद कुमार, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला कार्यक्रम अधिकारी मनोज राव, समाज कल्याण अधिकारी प्रवीण सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगणों के अलावा विभिन्न विद्यालयों की शिक्षिकाएं सहित काफी संख्या में महिलाएं एवं बालिकाएं उपस्थित रही।

## 'मिशन शक्ति' नैनी में निकला नारी स्वावलम्बन जन जागरूकता अभियान



जनजागरूकता रैली निकालती महिला पुलिस

नैनी। महिलाओं व बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वावलम्बी बनाने, उनमें सुरक्षित परिवेश की अनुभूति कराने, जन-जागरूकता पैदा करने, आत्म सुरक्षा की कला हेतु प्रशिक्षित करने के लिए शनिवार शाम को नैनी के मेवा लाल की बगिया तिराहे के समीप मिशन शक्ति कार्यक्रम के तहत फ्लैग मार्च का आयोजन किया गया। जिसमें महिला पुलिस कर्मियों ने फ्लैग

मार्च में भाग लेते हुए हनुमान नगर, स्टेशन रोड, नैनी बाजार, शंकरदाल समेत कई अन्य स्थानों से गुजरते हुए नारी सुरक्षा, नारी सम्मान एवं नारी स्वावलम्बन जागरूकता के बारे में महिलाओं को अवगत कराया। इस दौरान करछना सीओ, एएसपी सोमेश मीणा सहित नैनी कोतवाली से संबंधित इंसपेक्टर व दारोगा फ्लैग मार्च में मौजूद रहे।

### सुमधुर वेद ध्वनि के मध्यम से संपन्न हुआ मुकुट पूजन

नैनी। श्री सार्वजनिक राम लीला समिति नैनी के तत्वाधान में स्वदेशी काटन मिल मैदान (पी ए सी) पर शनिवार को रामलला का भव्य मुकुट पूजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर राम लीला मैदान को आकर्षक विधुत झालरों से सजाया गया। विद्वान आचार्यों ने वेद मंत्रों के माध्यम से मयादां पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, माता जानकी, भैया लखन लाल एवं श्री राम दूत महावीर हनुमान जी का मुकुट पूजन विधिवत करवाया। समिति के मुख्य संरक्षक विनीत पांडेय, अध्यक्ष राकेश जायसवाल, महामंत्री नयन कुशवाहा ने सर्वप्रथम भगवान का मुकुट पूजन किया। तत्पश्चात समिति के अन्य समस्त पदाधिकारियों ने भगवान राम, माता जानकी का मुकुट पूजन किया। मुकुट पूजन के पश्चात भगवान राम की आरती हुई एवं प्रसाद वितरण हुआ। मुकुट पूजन कार्यक्रम में प्रमुख रूप से आर के शुक्ला, केदारनाथ सचदेवा, अब्दुल गनी, अभिषेक पांडेय, धीरेन्द्र यादव, मुन्ना पांडेय, सुरेश पटेल, बृजेश सिंह, योगेश सिंह, रवि मिश्रा, अकबर प्रिंस, गुड्डू पांडेय, सिद्धू, धीरेन्द्र शर्मा, शिव शंकर मिश्रा, राज कुमार कुशवाहा, सुजीत जायसवाल आदि उपस्थित रहे।

## महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रहे स्वयं सहायता समूह : बीडीओ



मिशन शक्ति के तहत महिलाओं, बेटियों को जागरूक करते हुए

शंकरगढ़। विकास खंड मुख्यालय शंकरगढ़ पर विभिन्न धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में महिलाओं व बालिकाओं की सहभागिता एवं सुरक्षा के लिए मिशन शक्ति के तहत

महिलाओं को जागरूक किया गया। कार्यक्रम का आयोजन खंड विकास अधिकारी देवेन्द्र कुमार ओझा की अध्यक्षता में किया गया। खंड विकास अधिकारी ने कहा कि

महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं।

### 1128 स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं 12239 महिलाएं

एडीओ (आईएसबी) धीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने बताया कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विकास शंकरगढ़ में स्वयं सहायता समूह को राशन वितरण हेतु कोटा, बीसी सखी, ड्रेस सिलाई, ड्राईफ्रूट वितरण व बाल पोशाह बनाने आदि का काम दिया जा रहा है। बताया कि शंकरगढ़ में कुल 1128 महिला स्वयं सहायता समूह संचालित हैं, जिसमें 12239 महिलाएं जुड़ी हुई हैं। कार्यक्रम में खंड विकास अधिकारी देवेन्द्र कुमार ओझा, खंड शिक्षा अधिकारी प्रीती सिंह, बाल विकास परियोजना अधिकारी अरविंद व्यास, सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) ओमप्रकाश पांडेय, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ़ के अधीक्षक डॉ. शैलेन्द्र सिंह, कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय की वार्डन यासमीन, कृषि विभाग के तुलाराम यादव, ब्लाक मिशन प्रबंधक राममिलन सिंह, आशुतोष त्रिपाठी, तारेन्द्र सिंह, नारेन्द्र सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

खंड शिक्षा अधिकारी प्रीति सिंह ने बताया कि शासन द्वारा नवरात्रि के शुभ अवसर पर 17 अक्टूबर से 25 अक्टूबर के मध्य महिलाओं एवं बालिकाओं का सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रम में सहभागिता बढ़ाने तथा उनकी सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा मिशन शक्ति विशेष अभियान चलाया जा रहा है। मिशन शक्ति के माध्यम से महिलाओं एवं बालिकाओं को सुरक्षा एवं संरक्षा, पाक्सो एक्ट, मौलिक अधिकार, घरेलू हिंसा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा, लैंगिक समानता, आत्मसुरक्षा, बाल अधिकार आदि के बारे में जागरूक किया जाएगा। उन्होंने बताया कि शंकरगढ़ के परिषदीय विद्यालयों के बच्चों को दिए जाने वाले स्कूल ड्रेस बढ़ाने का काम स्वयं सहायता समूह को दिया गया। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं को टीवी के माध्यम से ज्ञानार्धक वीडियो, गुड टच, बैड टच के बारे में दिखाया गया।

## बीटीसी व डीएलएड की परीक्षाएं तीस से होगी शुरू

प्रयागराज। डीएलएड प्रशिक्षण 2019 प्रथम एवं 2018 तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा मार्च 2020 में प्रस्तावित थी। किन्तु कोविड 19 महामारी के कारण परीक्षाएं सम्पादित नहीं कराया जा सकी। जिसके लिए परीक्षा कार्यक्रम घोषित किया गया है। जो तीस अक्टूबर से 11 नवम्बर तक सम्पादित होगी।

डीएलएड प्रशिक्षण 2018 तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा हेतु अहं प्रशिक्षुओं जो प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में समस्त विषयों में उत्तीर्ण हो, के औसत अंक के समान अंक प्रदान करते हुए कक्षोन्तित प्रदान करने एवं प्रशिक्षण 2019 प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षुओं को कक्षोन्तित प्रदान करते हुए आगामी सेमेस्टर की परीक्षाएं अक्टूबर में सम्पादित कराये जाने का निर्देश है। जिसके अंतर्गत बीटीसी 2013 सेवारत (मृतक आश्रित) एवं 2014, 2015, डीएलएड प्रशिक्षण 2017 एवं 2018 तृतीय सेमेस्टर (अवशेष-अनुत्तीर्ण) बैंक पेपर एवं डीएलएड 2018 चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षाएं नौ से 11 नवम्बर तक सम्पादित कराया जायेगा। डीएलएड 2018 प्रथम, द्वितीय सेमेस्टर अनुत्तीर्ण एवं तृतीय सेमेस्टर में कक्षोन्तित के उपरान्त चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा में प्रतिभाग करने वाले प्रशिक्षुओं में प्रथम सेमेस्टर में अनुत्तीर्ण प्रशिक्षुओं की संख्या 46,732, द्वितीय सेमेस्टर में अनुत्तीर्ण

प्रशिक्षुओं की संख्या 57,270, प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में उत्तीर्ण प्रशिक्षुओं की संख्या 80,302, कक्षोन्तित हेतु अहं पाये गये प्रशिक्षुओं की संख्या 79,375 तथा प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में अनुत्तीर्ण के कारण तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा में सम्मिलित होने वाले प्रशिक्षुओं की संख्या 62,542 है। उल्लेखनीय है कि डीएलएड 2017 की चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षाएं सम्पादित कराते हुए पूर्व में ही परीक्षाफल फरवरी 2020 में घोषित किया जा चुका है। इस प्रकार 2017 बैच नियमित रूप से पूर्ण हो चुका है। इसमें मात्र वे ही परीक्षार्थी हेतु अवशेष है जो विभिन्न कारणों से विभिन्न सेमेस्टर्स में अनुत्तीर्ण-छूटे हुए हैं। उनके हितों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित परीक्षा कार्यक्रम के अनुसार तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा सम्पादित कराये जाने के उपरान्त परीक्षाफल घोषित करते हुए पृथक से माह जनवरी 2021 के अंतिम सप्ताह में चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षाएं सम्पादित कराये जाने का निर्णय लिया गया है।

### यूपी बोर्ड परीक्षा में शामिल होंगे 55,74,071 परीक्षार्थी

प्रयागराज। यूपी बोर्ड की 2021 सत्र में होने वाली परीक्षा के लिए शनिवार को पंजीकरण का कार्य पूरा हो गया। जिसके अंतर्गत बोर्ड परीक्षा में कुल 55,74,071 परीक्षार्थी शामिल होंगे। यह जानकारी यूपी बोर्ड के सचिव दिव्यकांत शुक्ला ने शनिवार को देते हुए बताया कि बोर्ड के 10वीं और 12वीं कक्षा का पंजीकरण आज पूरा हो गया है। हाईस्कूल में कुल 30,03,471 पंजीकृत हुए हैं। इसमें से संस्थागत 29,85,973 अभ्यर्थी हैं जबकि व्यक्तिगत 17,498 हैं। उन्होंने बताया कि इण्टरमीडिएट के संस्थागत के लिये 24,97,541 हैं जबकि व्यक्तिगत परीक्षार्थियों की संख्या 73,069 है। इस प्रकार इण्टरमीडिएट की परीक्षा के लिये 25,70,600 परीक्षार्थी पंजीकृत हुए हैं। उन्होंने कहा है कि अब जो भी विद्यालय अपने छात्र-छात्राओं का पंजीकरण नहीं कराया होगा उसके खिलाफ सख्त कारवाई होगी।

## लापता युवक को 12 घंटे के भीतर पुलिस ने किया बरामद, पुलिस पर जताया भरोसा

होलागढ़। होलागढ़ थाना क्षेत्र के हुलासगंज निवासी सलिक राम का 15 वर्षीय बेटा अर्जुन जायसवाल जो गुरवार को पंजीकरण से बगैर बताया हुए घर से चला गया। परिजनों ने काफी खोज बीना किया लेकिन कहीं भी पता नहीं मिला। परिजनों ने डायल 112 को सूचना दिया व सलिक राम ने शुक्रवार को होलागढ़ थाने पहुंच कर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराया। जिसके बाद होलागढ़ पुलिस हरकत में आते ही लगातार खोजबीन में जुट गयी। और सूचना मिलने के बाद लगभग दस घंटे के भीतर मऊआइमा इलाके के दुवाही से लापता अर्जुन जायसवाल को बरामद करते हुए परिजनों को सुपुर्द कर दिया। परिजनों व क्षेत्रीय लोग भी होलागढ़ इंसपेक्टर तारकेश्वर रॉय सहित पीआरवी होलागढ़ 120 पर तैनात सिपाही रोहित कुमार, चालक



लापता युवक को उसके परिजनों को सौंपती पुलिस

दिनेश कुमार मिश्रा, को आभार व्यक्त करते हुए सराहना किया। पुलिस की पृष्ठताछ में अर्जुन पटेल ने बताया कि

किसी बात पर मम्मी डांटते हुए पीट दिया था। लापता युवक को सूचना मिलने के बाद लगभग 12 घंटे में

बरामद करने पर होलागढ़ पुलिस व होलागढ़ पीआरवी की जमकर सराहना की।

### वरिष्ठ कर्मचारी नेता नरसिंह ने अटेवा प्रत्याशी का किया समर्थन

प्रयागराज। विकास भवन कर्मचारी संघ के अध्यक्ष और कर्मचारी महासंघ एवं उप्र राज्य कर्मचारी महासंघ अध्यक्ष नरसिंह ने इलाहाबाद- झांसी खण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र प्रत्याशी डॉ. हरिप्रकाश यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष अटेवा को अपना प्रथम वरीयता का मत देकर भारी मतों से विजयी बनाने की बात कही है।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियोग्य आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेल्ती रोड नया कटड़ा प्रयागराज से मुद्रित।  
**मुद्रक/प्रकाशक**  
**स्वामी श्री योगी सत्यम**  
पी0आर0वी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं०: UPHIN2001/9025

## मिशन शक्ति अभियान के तहत हुआ कार्यक्रम

करछना। नारी शक्ति सम्मान सुरक्षा और स्वावलम्बन के लिए मिशन शक्ति अभियान व बेटे बचाओ बेटे पढ़ाओ के तहत विकास खंड करछना के राष्ट्रीय आजीविका मिशन हाल में कार्यक्रम किया गया। जिसकी अध्यक्षता मनीष सिंह सहायक विकास अधिकारी (सहकारिता विभाग) ने कि। मनीष सिंह ने कहा कि महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा व सम्मान के मकसद से 17 अक्टूबर को सुबह 11 बजे से मिशन- शक्ति-नारी सुरक्षा-नारी सम्मान अभियान का आगाज हो रहा है। शारदीय नवरात्र से वासतिक नवरात्र तक चलने वाले इस अभियान को शुरू करने की सम्मान के लिए जन आंदोलन का रूप दिया जाए। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण अभियान है और यह बहुत ही ताकतवर है। वहीं विजय शंकर यादव सो(वि0अ0 (समाज कल्याण)ने कहा कि महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वावलम्बन तथा महिला अपराध तथा बाल अपराध के



कार्यक्रम में उपस्थित लोग

संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए माह के एक सप्ताह में खास कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अभियान के दौरान महिलाओं एवं बालिकाओं को आत्म निर्भर बनने का प्रशिक्षण, सुरक्षा एवं सम्मान के प्रति जागरूक किया जाएगा। वहीं कार्यक्रम में मुख्य रूप से

आनन्द सिंह (सीडीपीओ), सन्तोष कुमार श्रीवास्तव (बीईओ), अमित चौधरी पूर्ति निरीक्षक, व महिला डाक्टर स्वैता सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र करछना, सहायक अध्यापिका समूह सखी (एनआरयलयम) व करछना क्षेत्र कि महिला कोटेदार उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं,

बालिकाओं व बच्चों की सहभागिता एवं सुरक्षा, पाक्सो एक्ट एवं महिला अपराध संबंधी कानूनों का व्यापक प्रचार-प्रसार पर सभी अधिकारियों ने अपनी बात रखी। वहीं कार्यक्रम के सहयोगी रूप में अल्प नारायण सिंह ब्लाक ऑफिक, समर बहादुर, रविशंकर विश्वकर्मा, संजय यादव रहे।

### नवनियुक्त अस्सी सहायक अध्यापकों ने कार्यभार संभाला

प्रयागराज। बेसिक शिक्षा के अस्सी नवनियुक्त सहायक अध्यापकों ने शनिवार को मम्फोर्डगंज स्थित सर्व शिक्षा अभियान के कार्यालय में कार्यभार संभाल लिया है। नये शिक्षकों के कार्यभार संभालने के दौरान स्वास्थ्य प्रमाण पत्र भी लिया गया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संजय कुशवाहा ने बताया कि नवनियुक्त शिक्षकों ने देर शाम तक कार्यभार संभाल लिया है। लेकिन उनको स्कूल आवंटन के लिये अपाया है। उन्होंने कहा कि जो शिक्षक अभी तक कार्यभार ग्रहण नहीं कर पाये हैं, वह भी शीघ्र कार्यभार संभाल लेंगे। इस दौरान डीआई अर्जुन सिंह, समन्वयक राजीव त्रिपाठी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

## आईपीएल सट्टा चलाने वाले गिरोह का खुलासा, पांच गिरफ्तार

प्रयागराज। आईपीएल को लेकर सट्टा संचालित करने वाले गिरोह का खुलासा करते हुए सोरांव के गढ़ोपुर गांव से शनिवार को गंगापार की एसओजी टीम एवं सोरांव थाने की संयुक्त पुलिस टीम ने पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया। गिरोह के कब्जे से 7 मोबाइल, एटीएम, दो कोडिंग 95 हजार रूपए नगद और एक कार बरामद किया है। पकड़े आरोपितों में सोरांव थाना क्षेत्र के गढ़ोपुर गांव निवासी विपिन चैरसिया पुत्र नन्दलाल के घर से आईपीएल का सट्टा संचालित हो रहा था, इसके साहयोगी सोरांव फाफामऊ रूदापुर निवासी शाकिब पुत्र मो. मुश्तफा अहमद, फाफामऊ बाईपास निवासी अभिषेक जायसवाल उर्फ कोहली पुत्र राजेश जायसवाल, इसी का पड़ोसी शिवबाबू उर्फ बच्चा पुत्र स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद,

रूदापुर गांव निवासी मो. फैज पुत्र मुस्ताक है। उक्त जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक गंगापार धवल जायसवाल ने बताया कि विगत कुछ दिन से सूचना में मिल रही थी कि आईपीएल मैच को लेकर सट्टा हो रहा था। इस सामाजिक अपराध पर रोक लगाने के लिए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने एसओजी की टीमों को निर्देश दिया था। अभियान के तहत गंगापार एसओजी प्रभारी उपनिरीक्षक मनोज कुमार सिंह अपनी टीम के साथ सक्रिय थे। मुखबिर की सूचना पर उक्त आरोपितों को विपिन चैरसिया के घर से गिरफ्तार किया गया। उक्त आरोपितों के खिलाफ सोरांव थाने में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक धृत अधिनियम के तहत मुकुदमा दर्ज करके विधिक कार्रवाई पूरी करते हुए जेल भेजा जा रहा है।





प्रयागराज रविवार, 18 अक्टूबर, 2020

# क्रियायोग सन्देश



## क्रियायोग से प्राणायाम अवस्था की प्राप्ति

### श्वास का व्यायाम प्राणायाम नहीं है

प्राणायाम श्वास प्रस्वास के अभाव की अवस्था है जिस में स्थित होने पर मनुष्य के अंतः करण में सत्य व अहिंसा की स्थिति पूर्णतया प्रकाशित हो जाती है। क्रियायोग साधना के द्वारा शरीर व मन के बीच दूरी की शून्यता स्थापित होने पर श्वास प्रस्वास की गति स्थिर हो जाती है। ऐसी अवस्था में साधक अपने सर्वव्यापी, अनंत स्वरूप का साक्षात्कार कर लेता है।

### प्राणायाम का वास्तविक स्वरूप

‘प्राणायाम’ शब्द प्राण तथा आयाम के संयोग से बनना है।

प्राण का अभिप्राय प्राण तत्व तथा आयाम का अभिप्राय गुण, स्वरूप, प्रकृति आदि से है। प्राण के संपूर्ण आयाम के बारे में ज्ञान प्राप्त करना, प्राणायाम है।

प्राण को श्वास नहीं कहते हैं। प्राण के द्वारा श्वास का नियंत्रण होता है। न कि श्वास के द्वारा प्राण नियंत्रित होता है। क्रियायोग साधना के द्वारा प्राण तत्व से जुड़े होने का जैसे-जैसे अनुभव होने लगता है वैसे वैसे श्वास- प्रस्वास की गति कम होती जाती है, तथा अंतः करण में अनंत शक्ति, ज्ञान, धैर्य, साहस आदि बढ़ने लगता है। प्राण से पूर्ण एकता स्थापित होने पर श्वास की गति.....हो जाती है, जिसे समाधि कहा गया है। ऐसी अवस्था में साधक बिना श्वास गति, नाड़ी गति, हृदय गति आदि के जीवित रहता है। तथा वह परम जागरण की अवस्था- आत्मज्ञान की प्राप्ति कर लेता है। इस अवस्था के प्रकट होने पर मनुष्य के अंदर अलौकिक शक्तियां प्रकाशित होने लगती हैं। वह बिना इंद्रियों के संपूर्ण कर्मों को संपादित कर लेता है, जिसे इंद्रियातीत अनुभूति (इंद्रियों के परे की अवस्था) कहा गया है। इंद्रियातीत व्यवस्था है जिसमें साधक इंद्रियों की सीमित अनुभूत से ऊपर उठकर असीमता क उस घातल पर स्थित होता है। जहां उसे देखने के लिए आंखों की आवश्यकता नहीं पड़ती है, चलने के लिए पैरों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। वह बिना आंखों के देखता बिना कानों के सुनता, बिना पैरों के चलने की अलौकिक शक्ति से विभूषित होता है। इसी अवस्था को शास्त्रों में विभिन्न सिद्धियों- अणिमा, गरिमा, लघिमा आदि के रूप में वर्णित किया गया है।

प्रचलित तथाकथित प्राणायाम जिसमें श्वास को बलपूर्वक लेने, रोकने व निकालने की क्रिया का अभ्यास कराया जाता है, शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। श्वास



को बलपूर्वक लेने, रोकने व निकालने पर भय, काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर (आदत, अहंकार, अज्ञान) शंका, घृणा, राग द्वेष आदि मनोविकार प्रकट होते हैं। वायु का भीतर प्रवेश करना श्वास कहा जाता है तथा वायु का बाहर निकलना प्रश्वास कहा जाता है। दोनों की स्वाभाविक गति का विच्छेद अर्थात् अभाव प्राणायाम है। अतः प्राणायाम सिद्ध होने पर श्वास- प्रस्वास की गति स्वतः शून्य हो जाती है। और साधक दिव्य चेतना जिसे आत्मानुभूति (अमरत्व की अनुभूति) कहा गया है, में लीन रहता है।

श्री श्री परमहंस योगानंद जी ने अपनी आत्मकथा-‘योगी कथामृत’ में प्राणायाम के इसी स्वरूप को परिभाषित करते हुए कहा है।

Patanjali refers a second time to the lifecontrol or kriya technique thus: "Liberation can be accomplished by that Pranayama which is attained by disjoining the course of inspiration and expiration."

‘अनेक मार्गभ्रष्ट उत्साहोन्मत्त व्यक्तियों के द्वारा सिखाए जाने वाले वैज्ञानिक श्वास व्यायामों से क्रियायोग का कोई संबंध नहीं है। फेफड़ों में श्वास को बलपूर्वक रोकने की चेष्टा अप्राकृतिक तथा निसंदिग्ध रूप से कष्टकर भी है। इसके विपरीत आरंभ से ही क्रियायोग के अभ्यास के बाद शांति की भावना और मेरुदंड में पुनरुज्जीवनी शक्ति के प्रभाव की सुखद अनुभूति प्राप्त होती है। तेज या विषम श्वास भय, काम या क्रोध जैसे हानिकारक भावावेगों की अवस्था का सहचर है।

### क्रियायोग से आसन अवस्था की प्राप्ति

आसन की स्थिति का अभिप्राय है सुख की स्थिरअवस्था। सुख की स्थिर अवस्था तभी प्राप्त होती है, जब मनुष्य को अनुभव हो जाता है कि उसका अस्तित्व अमर है। हमारी स्थिति की अनुभूत करना ही अहिंसा में प्रतिष्ठित होना है।

आसन के नाम पर प्रचलित क्रियाएं जिसमें शरीर को बलपूर्वक तोड़ने- मरोड़ने व जिमनास्टिक से संबंधित क्रियाओं का अभ्यास कराया जाता है, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

इन क्रियाओं को ज्यादा करने पर हृदय की बीमारी, गठिया, नसों की कमजोरी, डर आदि प्रकट होता है। तथाकथित प्रचलित आसन प्रणाली का अभ्यास किसी भी आत्मज्ञानी ऋषि संत कबीर, नानक देव, योगीराज श्री श्री लाहिड़ी महाशय आदि ने न तो स्वयं किया और न किसी को करने के लिए कहा।

आसन को परिभाषित करते हुए महर्षि पतंजलि ने कहा है-

" स्थिरसुखमासनम् " सुख की स्थिर अवस्था आसन है ।

'सुख' एक सूक्ष्म शब्द है 'सुख' शब्द 'सु' और 'ख' 2 अक्षरों के सहयोग से बना है। 'सु' का अभिप्राय सुंदर से है, तथा सुंदर का अभिप्राय किसी भी रचना को अस्पष्ट रूप में देखने से है। 'ख'



का अभिप्राय आसमान अर्थात् असीमता है। आसन साधना की असन साधना कि वह अवस्था है। जिस में स्थित होने पर स्वरूप तथा ब्रह्मांड की समस्त रचनाएं अनंत व असीम है, का अनुभूतिजन्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है ।

आसन का अभ्यास नहीं किया जा सकता है। क्रियायोग की साधना से आसन अवस्था की प्राप्ति होती है, जिसमें स्थित होने पर समस्त

रचनाएं- आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, पेड़-पौधे, जीव- जंतु, मानव, संपूर्ण दृश्य व अदृश्य जगत अनंत सर्वव्यापी परमतत्त्व(परब्रह्म शक्ति) का प्रकाश है, अनुभव हो जाता है। ऐसी अवस्था में कोई भी रचना छोटी अथवा सीमित रूप में नहीं अनुभव होती है। समस्त रचनाओं का स्वरूप अनंत व असीम तथा प्रत्येक रचना शक्ति व ज्ञान की संपूर्ण इकाई के रूप में अनुभव होती है ।